बाइबल टीचर

वर्ष 19 | मार्च 2022 | अंक 4

सम्पादकीय

यीशु पापियों के लिये आया था

यीशु पर अक्सर एक दोष लगाया जाता था कि वह पापियों के घर जाता है ओर उनके साथ खाना खाता है। मत्ती के 9:10 में लिखा है। ''और जब वह घर में भोजन करने बैठा तो बहुतेरे महसूल लेने वाले और पापी आकर यीशु और उसके चेलों के साथ खाना खाने बैठे। (मत्ती 9:10)। यह देखकर फ़रीसियों ने उसके चेलों से कहा, तुम्हारा गुरू महसूल लेने वालो और पापियों के साथ क्यों खाता है? यीशु ने उन्हें सही उत्तर दिया और कहा, ''वैद्य भले चंगों को नहीं परन्तु बीमारों को अवश्य है। सो तुम जाकर इसका अर्थ सीख लो, मैं बलिदान नहीं परन्तु दया चाहता हूं, क्योंकि मैं धर्मियों को नहीं परन्तु पापियों को बुलाने आया हूं।'' (9:11-13)।

यहूदी लोगों के लीडर इस बात में बड़े ही कट्टरवादी थे कि किससे मेल-जोल रखना है और किससे नहीं रखना। विशेषकर पापियों से तो बिल्कुल बात नहीं करनी है जैसे महसूल लेने वाले, वैश्या या सामरी लोग जिन्हें यहूदी छोटी जात के समझते थे। क्योंकि फरीसी अपने आप को इतना धार्मिक समझते थे कि उनके जैसा कोई धार्मिक है ही नहीं। हमें यह देखना चाहिए कि यीशु इन लोगों से मिलता था और उनका आदर करता था, वह कभी भी उनकी बुराईयों में उनका साथ नहीं देता था। यीशु बिल्कुल निष्पाप था (1 पतरस 3:19)। कभी भी उसने कोई पाप नहीं किया और न ही उसके मुंह से कोई छल की बात निकली। (1 पतरस 2:22)। हमेशा यीशु ने पापी लोगों को यह समझाया कि वे बुराई से अपना मन फिरायें। उसने उन्हें सिखाया ताकि पाप को छोड़कर वे अपना जीवन परमेश्वर को दें। (लूका 15:1-32)। यीशु के पास जब एक स्त्री को लाया गया जो व्याभिचार में पकड़ी गई थी परन्तु यीशु ने उस पर कोई दोष नहीं लगाया बल्कि उसे क्षमा करके कहा कि जा फिर पाप न करना। (यूहन्ना 8:2-11)। उसने ऐसा नहीं सोचा होगा कि यीशु ने मुझे अब क्षमा कर दिया है और अब मैं मन मर्जी से जो भी करूं।

यीशु इन लोगों की जिंदगी को बदलना चाहता था। उसकी इच्छा थी कि ऐसे लोग अपने पापमय जीवन को छोड़कर एक नई शुरूआत करें। (मत्ती 21:28-32)

हम मसीही लोग संसार में है परन्तु संसार के बुरे और अनुचित कार्यों में भाग नहीं लेते। यदि हम ऐसे लोगों से दूर हो जायेंगे तो उन्हें गलत मार्ग से सही मार्ग पर कैसे लायेंगे। उनसे घृणा न करें बल्कि उन्हें सही मार्ग पर लाने का प्रयास करें।

जब हम ऐसे लोगों के सम्पर्क में आते हैं तो उन्हें यीशु और उसके सुसमाचार के विषय में बतायें। ऐसे लोगों को बतायें सुसमाचार में सामर्थ है ताकि वो अपना जीवन बदल सके (रोमियों 1:16)। जो लोग सुसमाचार यानि यीशु के संदेश को सुनते हैं उन्हें अपना मन फिराकर इसे मानना पड़ता है। यानि वे अपने जीवन को सम्पूर्ण रूप से समर्पित कर देते हैं। जब लोग यीशु के पास आकर उसकी आज्ञा को मानकर अपना जीवन उसे दे देते हैं तब उनका जीवन बदल जाता है (2 कुरि. 5:17)।

कई लोगों की मानसिकता यह होती है कि ऐसे लोगों को बुरा समझकर हमें उनसे अपना रास्ता फेर लेना चाहिए तथा वे यह नही समझते कि यीशु खोये हुओं को खोजने तथा उनका उद्धार करने आया था। वह कभी भी लोगों के उपर पत्थर नहीं फेंकता था। फरीसी लोग जो उस समय के धार्मिक अगुवे होते थे जब पापियों को या उस प्रकार के लोगों को देखते थे तो वे अपना रास्ता बदल देते थे। यीशु उन्हें कहता था तुम सांप के बच्चे हो। और उन्हें चूना फिरी हुई कब्र भी बोलता था। क्योंकि उनमें धार्मिक दिखावा बहुत था। वे दूसरों से अपने को बहुत धार्मिक समझते थे। किन्तु यीशु की विशेषता यह थी कि वह पाप से घृणा करता था, लेकिन पापियों से नहीं। हमें लोगों को जो पापों में खोये हुए हैं, उन्हें आग से बाहर निकालना हैं, उनका मजाक नहीं उड़ाना है। परन्तु मनुष्य की प्रवृत्ति यह है कि वह अपने को बहुत साफ सुथरा समझकर दूसरों को गिरा हुआ समझता है। यीशु ने एक बार कहा था, ''दोष मत लगाओ कि तुम पर भी दोष न लगाया जाएं। क्योंकि जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा। (मत्ती 1:1-2)। हम मसीही लोगों को सबसे पहिले अपने जीवनों को सही करना चाहिए तथा पूरा प्रयत्न करना चाहिए कि पाप में खोये हुए लोगों को यीशु का सुसमाचार दें। क्योंकि उस सुसमाचार में पापियों को उनके पापों में बचाने की सामर्थ है। (रोमियों 1:16)। पापियों से यीशु प्रेम करता है और इसलिये वह चाहता है कि वे उसके पास आएं। यीशु ने कहा था, ''सब परिश्रम करने वालों और पाप से दबे लोगों, मेरे पास आओ, मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' (मत्ती 11:28)। हम मसीही लोग पाप के विरूद्ध हैं, परन्तु पापियों के नहीं और यदि वे अपने पाप को छोड़ कर और अपना मन बदलकर यीशु के पास आते हैं तो उनका स्वागत है। हमारा काम है लोगों तक सुसमाचार को ले जाना। (मत्ती 28:19-20)।

कलीसिया का इतिहास

सनी डेविड

आज अपने पाठ में हम कलीसिया अर्थात चर्च के इतिहास के बारे में संक्षिप्त रूप से देखेंगे। चर्च, अर्थात कलीसिया एक बाइबल का विषय है। बाइबल से हम सीखते हैं कि कलीसिया की स्थापना स्वयं प्रभु यीशु

मसीह ने की थी। (मत्ती (16:18)। कलीसिया का संचालक या मुखिया अर्थात सिर स्वयं यीशु मसीह है। (कुलु. 1:18)। वास्तव में, कलीसिया या चर्च का तात्पर्य किसी भवन या मंदिर या घर से नहीं है, जिसे लोग ईंटों और पत्थरों से अपने हाथों से बनाते हैं। किन्तु, बाइबल में जिस कलीसिया के बारे में हम पढ़ते हैं उसका अर्थ है उन लोगों की एक मंडली, या एक जमायत, या एक झुंड जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह में यह विश्वास किया है कि वह परमेश्वर का पुत्र है, और वह स्वर्ग से पृथ्वी पर आया था, और उसने अपना ही बलिदान देकर सारे जगत के पापों का प्रायश्चित किया था। उन लोगों ने प्रत्येक बुराई से अपना मन फिराकर, पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा लिया हैं (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 2:37-47)। वे केवल मसीही, अर्थात मसीह के अनुयायी है।

कलीसिया को आरंभ में क्योंकि यीशु मसीह ने स्वयं बनाया था, और मसीह ने यह कहा था, जैसा कि बाइबल में मत्ती 16:18 में हम पढ़ते हैं, कि मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा इसलिये आरंभ में केवल एक ही कलीसिया थी और उसे मसीह की कलीसिया कहा जाता था। और इसी तरह से, मसीह की कलीसिया की अनेकों मंडलियों को मसीह की कलीसियाएं कहा जाता था, जैसा कि बाइबल में रोमियों 16:16 में हम पढ़ते हैं।

आरंभ में, जब मसीह ने अपनी कलीसिया को यरूशलेम में बनाया था तो उस समय कलीसिया में केवल वही लोग थे जो यहूदी मत से आए थे। लेकिन बाद में जब मसीह का सुसमाचार अन्य लोगों ने भी सुना था तो वे भी सुसमाचार को मानकर मसीह की कलीसिया में शामिल हो गए थे। उस समय उन लोगों पर रोम का राज था। और जब मसीह की कलीसिया दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी थी, तो रोमियों ने कलीसिया का कड़ा विरोध किया था। पर बाद में, पर बाद में, आने वाले वर्षों में, स्वयं बहुत से रोमी लोगों ने भी मसीहीयत को स्वीकार कर लिया था, और अनेकों रोमी लोग मसीह के अनुयायी बन गए थे, और उसकी कलीसिया में शामिल हो गए थे। और जैसे-जैसे समय बीतता गया, सारे रोमी राज्य में मसीह की कलीसिया बढ़ती चली गयी। पर कुछ समय में कलीसिया को एक नया नाम देकर उसे रोम के साथ जोड़ दिया गया- और इस प्रकार रोम की कलीसिया, अर्थात रोमन कैथलिक कलीसिया का आरंभ हुआ था। पर न केवल कलीसिया को एक नया नाम ही दिया गया था, पर आने वाले वर्षों के भीतर कलीसिया में ऐसी-ऐसी शिक्षाओं को भी अपनाया जाने लगा था, जिनका वर्णन बाइबल में कहीं नहीं मिलता। जैसे कि छोटे बच्चों को बपतिस्मा देना, बपतिस्मा लेने वालों को जल में गाड़कर बपतिस्मा देने के बजाय उन पर पानी का छिड़काव करना तथा पवित्र जल का उपयोग करना और ऐसी ही अन्य दर्जनों शिक्षाओं को कलीसिया में सिखाया जाने लगा। ऐसा करने से न केवल मसीह की कलीसिया का स्वरूप ही बदल गया, पर एक नई कलीसिया का आरंभ हो गया। और यह सिलसिला लगभग एक हजार वर्षों तक चलता रहा। और इस दौरान कैथलिक कलीसिया इतनी शक्तिशाली हो गई थी, कि मसीह की कलीसिया को लोग लगभग भूल ही बैठे।

किन्तु, तभी पन्द्रहवीं सदी में कुछ लोग, जिनका संबंध रोमन कैथलिक

कलीसिया से था, और जो कलीसिया में याजक और शिक्षा देने का काम करते थे, इस बात की ओर जागरूक हो उठे कि वे बाइबल और उसकी शिक्षाओं से कितने दूर जा चुके थे। वास्तव में यह वह समय था, जबकि लोगों को बाइबल अपने पास रखना और पढ़ना सख्त मना था। सो लोग स्वयं तो वास्तव में जानते ही नहीं थे कि बाइबल में क्या लिखा है। वे केवल वही करते और मानते थे जो उन्हें याजक अर्थात प्रीस्ट या फादर लोग बताया करते थे। सो उनमें से कुछ याजकों ने, जिनमें मार्टिन लूथर का नाम प्रमुख था, कलीसिया का विरोध करना आरंभ कर दिया। इसलिये उन्हें रोमन कैथलिक कलीसिया से बाहर निकाल दिया गया, और उन्हें विरोधी अर्थात प्रोटेस्टैंट कहा जाने लगा।

और इस प्रकार पन्द्रहवीं सदी से ही अन्य साम्प्रदायिक कलीसियाओं का आरंभ होने लगा। क्योंकि जैसे कुछ लोग मार्टिन लूथर के पीछे हो लिये और इस प्रकार वे लूथरन कहलाने लगे थे। ऐसे ही कुछ अन्य लोग मार्टिन लूथर जैसे दूसरे अगुओं के पीछे हो लिये थे जिन्होंने अपनी-अपनी कलीसियाओं के नाम या तो किसी विधी विशेष के ऊपर रख दिये, जैसे मेथोडिस्ट या किसी शिक्षा के ऊपर रख दिए जैसे बैपटिस्ट या किसी दिन के ऊपर रख दिये जैसे पेन्टेकोस्टल और आज परिस्थिति यह है, कि पृथ्वी पर आज लगभग एक हजार प्रकार की अलग-अलग कलीसियाएं हैं। इन कलीसियाओं के न केवल नाम ही अलग-अलग हैं पर इनकी शिक्षाएं और विश्वास भी अलग-अलग हैं। हां, ये सब एक ही बाइबल को मानने का दावा तो करती हैं, पर फिर भी बाइबल की शिक्षाओं को अलग-अलग तरीके से मानती और सिखाती है। क्योंकि लगभग सभी साम्प्रदायिक कलीसियाएं रोमन कैथलिक कलीसिया के भीतर से ही निकली हैं, इसलिये उन सभी में कहीं न कहीं उन शिक्षाओं को देखा जा सकता है जिन्हें रोमन कैथलिक कलीसिया में सिखाया जाता था।

किन्तु, आज से लगभग 2000 वर्ष पूर्व प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थुस में कलीसिया के नाम एक पत्र लिखा था, जिसे बाइबल में आज हम पहले कुरिन्थियों की पत्री के नाम से जानते हैं। इस पत्री के पहले अध्याय की 10 से 13 आयतों में प्रेरित ने लिखकर इस प्रकार कहा था, हे भाइयो, मैं तुमसे यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो, और तुम में फूट न हो, परन्तु एक ही मन और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे बारे में बताया है कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अपुल्लोस का, कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिये क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?

अब क्या कहा था पौलुस प्रेरित ने उनसे? प्रेरित ने उन से कहा था, कि तुम सब लोग एक ही बात कहो। अर्थात जब सब लोग एक ही बात ही कहेंगे, तो उन सब में एकता होगी। पर उनमें एकता क्यों नहीं थी? उन में एकता इसलिये नहीं थी, क्योंकि वे सब टोलियां बनाकर अपने आप को अलग-अलग नामों से कहला रहे थे। और आज भी ठीक यही बात है। क्यों आज पृथ्वी पर अलग-अलग नामों की

और अलग-अलग शिक्षाओं की कलीसियाएं हैं? इसलिये, कयोंकि वे सब एक ही बात नहीं कहते। और वे एक बात इसलिये नहीं कहते, क्योंकि वे एक बात, अर्थात जो बाइबल के नये नियम में लिखी है, उसे नहीं सुनते। एक समय था, जैसा कि अभी हम ने देखा था, जबकि लोगों को अपने पास बाइबल रखने को और पढ़ने को मना किया गया था। वह समय अंधकार का समय था- क्योंकि परमेश्वर के वचन की ज्योति से लोग अपरिचित थे। लेकिन आज जबकि लोग स्वयं परमेश्वर के वचन की पुस्तक को पढ़कर, और सच्चाई को जानकर उस पर चल सकते हैं, परन्तु फिर भी अधिकतर लोग परमेश्वर के वचन की शिक्षा से अपरिचित हैं। क्योंकि लोग स्वयं तो पढ़ते हैं, पर अपने धर्म-गुरुओं, पास्टरों और अपनी कलीसियाओं की बातें सुनकर उन्हीं को मानते हैं। लेकिन प्रभु यीशु ने कहा था, जैसा कि हम यूहन्ना 8:32 में पढ़ते हैं, कि जब तुम सत्य को जानोगे तो सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। और आज मैंने आपको परमेश्वर के वचन की यह सच्चाई बताई है, कि मसीह ने आरंभ में अपनी केवल एक ही कलीसिया को बनाया था। और उसने मनुष्यों को अलग-अलग नामों की कलीसियाओं को बनाने का अधिकार नहीं दिया है। उसकी आज भी केवल एक ही कलीसिया है। और सब लोग जो उसमें विश्वास लाते हैं और उसकी आज्ञा को मानकर उद्धार पाते हैं, उन सब को वह आज भी अपनी उसी कलीसिया में मिलाता है; जो उसी के नाम से कहलाती है; और उसी के अधिकार से चलती है। क्या आप मसीह की कलीसिया के बारे में और अधिक जानना चाहते हैं? यदि हां, तो हमें अवश्य लिखिए।

बाइबल अध्ययन

जे. सी. चोट

नए नियम में उपासना के जिन पांच नियमों का वर्णन हमें मिलता है उनमें से एक है बाइबल अध्ययन। इस संबंध में न केवल हमें आज्ञा ही मिलती है परन्तु हम ऐसे उदाहरणों को भी देखते हैं जिनमें यह बताया गया है कि प्रथम मसीही उपासना में बाइबल अध्ययन करने के लिये इक्ट्ठे होते थे।

बाइबल अध्ययन व्यक्तिगत तथा सामूहिक रूप से भी किया जा सकता है, परन्तु इस समय इस संबंध में हम इस दृष्टिकोण से देख रहे हैं कि जब हम सप्ताह के पहिले दिन उपासना के लिए एकत्रित होते हैं तो हमें बाइबल का अध्ययन करना चाहिए। जब हम बाइबल को पढ़ते हैं, तो प्रभु इस प्रकार अपने वचन के द्वारा हमसे बातें करता है।

उपासना के इस नियम का पालन हम स्वयं पवित्रशास्त्र में से पढ़कर तथा अध्ययन करके या किसी के द्वारा परमेश्वर के वचन को सुनकर कर सकते है। प्रेरितों 20:7 के द्वारा हम देखते हैं कि जब मसीही लोग त्रोआस में उपासना करने के लिये एकत्रित हुए तो पौलुस ने उन्हें उपदेश दिया। प्रेरितों 17:10.12 में हम पढ़ते

हैं, भाईयों ने तुरन्त रात ही रात पौलुस और सीलास को बीरीया को भेज दिया, और वे वहां पहुंचकर यहूदियों के आराधनालय में गए। ये लोग तो थिस्सलुनीके के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया, और प्रति-दिन शास्त्रों में ढूंढ़ते रहें कि ये बातें यों ही है, कि नहीं। सो उनमें से बहुतों ने, और यूनानी कुलीन स्त्रियों में से, और पुरुषों में से बहुतेरों ने विश्वास किया। मसीह ने शिक्षा देकर कहा था कि, तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता हैं (यूहन्ना 5:39)।

नवयुवक प्रचारक तीमुथियुस को पौलुस लिखकर कहता है, अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। (2 तीमुथियुस 2:15)। प्रभु यीशु ने कहा था, धन्य है वे, जो धर्म के भूखे और पियासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे। (मत्ती 5:6)। फिर, प्रभु ने कहा था, कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा। (मत्ती 4:4)।

यह बात बड़ी ही महत्वपूर्ण है कि हम न केवल पढ़ें परन्तु उचित बातों को पढ़ें। ठीक यही बात प्रवचन या उपदेश को सुनने के संबंध में भी याद रखनी चाहिए। प्रेरित पौलुस कहता है, सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है (रोमियों 10:17)। सो इसका अर्थ यह हुआ कि यदि हम गलत शिक्षा को सुनते हैं तो हमारा विश्वास भी गलत शिक्षा पर आधारित होगा, और विशेषकर उस समय जबकि हम परखें बिना विश्वास ले आते हैं। परन्तु यदि सच्चाई को सुनते हैं तो प्रत्यक्ष ही है कि हमारा विश्वास भी सच्चाई पर ही होगा।

परमेश्वर ने आज अपनी इच्छा को प्रकट किया है और यह कार्य उसने अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा किया है (इब्रानियों 1:1, 2)। जब एक पहाड़ पर यीशु का रूपान्तर हुआ था, तो परमेश्वर ने स्वयं उसके संबंध में यूं कहा था, कि यह मेरा पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं, इसकी सुनो। (मत्ती 17:5)। सो जो कुछ यीशु मसीह ने बोला वह परमेश्वर का वचन था। यीशु ने उसको उत्तर दिया, यदि कोई मुझसे प्रेम रखे तो वह मेरे वचन को मानेगा, और मेरा पिता उससे प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे और उसके साथ वास करेंगे। जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता, और जो वचन तुम सुनते हो, वह मेरा नहीं वरन पिता का है, जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 14:23, 24)। फिर उसके संबंध में यह लिखा गया था कि, यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए। परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ। (यूहन्ना 20, 30, 31)। इसके अतिरिक्त हम पढ़ते हैं कि सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है, और मनुष्य को प्रत्येक भले काम के लिए कुशल बनाता है, तथा यह स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था है। (2 तीमुथियुस 3:16, 17, याकूब 1:25)।

जबकि उपरोक्त बातें सच हैं, इसलिये अनेक कारणों से हमें प्रभु के दिन पर उसके वचन का अध्ययन करने के लिये एकत्रित होना चाहिए।

1. ऐसा इसलिये हमें करना चाहिए क्योंकि वह परमेश्वर का वचन है। (इब्रानियों 13:7; 1 पतरस 1:23, इफिसियों 6:17)। कितनी अद्‌भुत बात है यह कि परमेश्वर ने हमें अंधकार में नहीं रखा परन्तु अपनी इच्छा को हमारे ऊपर प्रकट किया है।
2. परमेश्वर के वचन को भली-भांति जानने की हमारे भीतर इच्छा होनी चाहिए। (प्रेरितों 13:7)। इसलिये यह बात स्वयं हम पर ही निर्भर करती हैं कि उसकी इच्छा को जानने के लिये हम उसके वचन का अध्ययन करें। प्रभु ने हमें समझने के लिये एक अच्छा दिमाग दिया है और हम उसके वचन को पढ़कर और उसका अध्ययन करके उसकी इच्छा को स्वयं जान भी सकते हैं।
3. हमें झूठी शिक्षाओं के धोखे में आने से बचने के लिये अध्ययन करने की आवश्यकता है। (इफिसियों 4:14, 5:6, याकूब 1:2)। मसीहियत के नाम पर आज बहुत कुछ सिखाया जा रहा हैं किन्तु हम कैसे जान सकते हैं कि क्या सच है और क्या झूठ है? जिसे हम सुनते हैं उसे परमेश्वर के वचन के साथ मिला कर देखें। यूहन्ना उपदेश देकर कहता है कि हमें आत्माओं अर्थात प्रचारकों को परखकर देखना चाहिए कि वे परमेश्वर की ओर से है या नहीं। (1 यूहन्ना 4:1)। यदि कोई परमेश्वर के वचन का अध्ययन भली-भांति करता है तो वह धोखे में नहीं आ सकता।
4. हमें परमेश्वर के वचन का अध्ययन इसलिये भी करना चाहिए ताकि उसकी इच्छा से परिचित होकर हम अन्य लोगों को भी सिखा सके। पौलुस कहता है कि इन बातों पर स्थिर रह, क्योंकि यदि ऐसा करता रहेगा, तो तू अपने और अपने सुनने वालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा। (1 तीमुथियुस 4:16)। आरंभ के मसीही लोगों का वर्णन करके, लेखक कहता है, जो तितर-बितर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे। (प्रेरितों 8:4)।

अपने अध्ययन को जारी रखते हुए, मैं एक बार फिर से 2 तीमुथियुस 2:15 का वर्णन करना चाहूंगा। जहां पौलुस कहता है कि सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाने के लिये अध्ययन करना चाहिए। सो अपने अध्ययन में हमें ठीक ऐसा ही करना सीखना चाहिए। अर्थात इस प्रकार अध्ययन करने से हम पाएंगे कि बाइबल में पुराना नियम और नया नियम दो भाग है। हम यह भी देखेंगे कि पुराने नियम में हमें दो वाचाएं अर्थात कुलपतियों की वाचा (आदम से मूसा तक) तथा मूसा की वाचा मिलती हैं, और ये दोनों ही अब समाप्त हो चुकी है और नया नियम मसीह की वाचा है। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं, कि पुराने नियम का संबंध उन लोगों से था जो मसीह की मृत्यु से पूर्व रहते थे। इसी कारण से जबकि एक पुराना है तो दूसरा नया है। परन्तु हम आज कौन से नियम में है? प्रत्यक्ष ही है कि हम आज मसीह के नियम के आधीन है जो कि बाइबल का नया नियम है, क्योंकि हम क्रूस के ऊपर मसीह की मृत्यु के बाद के समय में रहते हैं। (इब्रानियों

9:16, 17; 10:9)।

अब कदाचित कोई यह प्रश्न करे कि क्या पुराने नियम को हम परमेश्वर का वचन मानते है? इसका उत्तर निश्चय ही हां है। किन्तु बात यह है कि पुराना नियम हमारे लिये आज परमेश्वर का नियम (वाचा) नहीं हैं। परन्तु फिर पुराने नियम को हमें क्यों पढ़ना चाहिए? इसके अनेक कारण हैं:

1. उत्पत्ति तथा सब वस्तुओं के आरंभ के बारे में जानने के लिये।
2. मनुष्य के इतिहास से परिचित होने के लिए और इस बात से परिचित होने के लिए एक उस युग में परमेश्वर ने मनुष्य के साथ किस प्रकार का संबंध रखा था।
3. क्योंकि पौलुस कहता है कि वे सब बातें आज हमारे लिये उदाहरण या दृष्टांत हैं। वास्तव में पुराने नियम में अनेक उदाहरण है।
4. पुराने नियम में अनेक ऐसे सिद्धांत हैं जो आज भी उसी प्रकार सही है जैसे कि उस समय थे जब उन्हें दिया गया परन्तु व्यवस्था या वाचा से उनका कोई संबंध नहीं है।
5. ताकि हम इस बात से परिचित हो जाएं कि आज हम एक उत्तम वाचा के भीतर या आधीन हैं और हमारे पास एक उत्तम आशा है।

बाइबल अध्ययन के निम्नलिखित नियम परमेश्वर के वचन को ठीक से समझने के लिये उपयोगी हैं और वचन को ठीक रीति से काम में लाने के लिये सहायक है:

1. विषय को अनेक बार पढ़िए।
2. संदर्भ को भी पढ़िये।
3. देखें कि कौन बोल रहा है?
4. वह किस से बोल रहा है?
5. कब बोला गया था?
6. भाषा प्रतीकात्मक है या स्पष्ट है?
7. क्या वह एक आज्ञा है?
8. क्या उसका अभिप्राय हमारे उद्धार से है?

इसी प्रकार ये वस्तुएं भी आपके बाइबल अध्ययन में सहायक सिद्ध हो सकती है, विभिन्न अनुवाद, बाइबल शब्द कोश, कॉनाकोरडेन्स, बाइबल टीकाएं इत्यादि। परन्तु सब बातों से अधिक, स्वयं बाइबल को ही प्रार्थना सहित पढ़िए। बहुतेरे लोग बाइबल के बारे में तो अनेक बातें जानते हैं परन्तु बाइबल में जो लिखा है उससे अपरिचित है।

यदि आप और मैं वहीं करेंगे जो करने को प्रभु ने हम से कहा है और प्रत्येक सप्ताह के पहिले दिन उसके पवित्र लोगों के पास एकत्रित होकर उसके वचन का अध्ययन करेंगे, तो हमारा बाइबल ज्ञान बढ़ेगा और उसके द्वारा हम अपने मसीही जीवन में उन्नति करेंगे। यदि हम सब ऐसा ही करेंगे तो कलीसिया मजबूत बनेगी और कदाचित इसके द्वारा हम अपने उन मित्रों को जो अनन्य धार्मिक संगठनों में हैं इस बात का निश्चय दिला सकेंगे कि केवल परमेश्वर का वचन ही हमारा उद्धार कर सकता है तथा हम सबको एक कर सकता है।

मसीह का बपतिस्मा

जॉन स्टेसी

इससे पहले कि यीशु परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना आरंभ करता, यीशु ने बपतिस्मा लिया था। सुसमाचार की चारों किताबों में भी यीशु के बपतिस्मा लेने का वर्णन मिलता है। इसलिये इस विषय में देखना कुछ अनुचित न होगा। इस संबंध में यहां हम मत्ती 3:13-17 पदों पर ध्यान देंगे।

इस विषय में सबसे पहली बात हम यह देखते हैं कि यीशु स्वयं यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के पास इस उद्देश्य से आया था कि यूहन्ना उसे बपतिस्मा दे। पर क्यों?

यीशु ने यूहन्ना 3:15 में बपतिस्मा देने वाले से कहा था, कि अब तो ऐसा ही होने दे, क्योंकि हमें इसी रीति से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। भजन संहिता 119:172 में दाउद ने कहा था, क्योंकि तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं। यीशु ने अपने पिता की इच्छा को पूरा करने के लिए बपतिस्मा लिया था। इसी बात पर बल देकर, यूहन्ना 6:38 में यीशु ने यूं कहा था, क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, वरन अपने भेजने वाले की इच्छा पूरी करने के लिए स्वर्ग से उतरा हूं।

दूसरे, यीशु ने इसलिये भी बपतिस्मा लिया था ताकि वह अन्य सब लोगों के सामने एक उदाहरण रखें। पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के बारे में कहा था कि वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। (1 थिस्सलुनीकियों 1:6)। यदि वे प्रभु का अनुसरण कर रहे थे तो उन्होंने बपतिस्मा भी अवश्य ही लिया होगा। यीशु ने परमेश्वर पिता की आज्ञाओं को मानकर हमें सिखाया है कि परमेश्वर की प्रत्येक आज्ञा को मानना हमारा कर्त्तव्य है। उसने यूहन्ना 9:4 के अनुसार कहा था, कि, जिसने मुझे भेजा है, हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है।

यीशु ने इस बात का भी उदाहरण हमारे सामने रखा है कि जिन बातों को वह सिखाता था वह उन्हें स्वयं भी मानता था। यूहन्ना 3:5 में उसने कहा था कि जब तक कोई मनुष्य जल और आत्मा से न जन्मे तो वह परमेश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकता। ऐसे ही मरकुस 16:16 में यीशु ने कहा था कि जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।

यीशु ने अपने मसीह होने को सिद्ध करने के लिये भी बपतिस्मा लिया था। यूहन्ना 1:31 में हम पढ़ते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यूं कहा था, और मैं तो उसे पहचानता न था, परन्तु इसलिये मैं जल से बपतिस्मा देता हुआ आया, कि वह इस्राएल पर प्रकट हो जाए। और अपने पिता को प्रसन्न करने के लिये भी, यीशु ने बपतिस्मा लिया था। क्योंकि मत्ती 3:17 में हम यूं पढ़ते हैं कि जैसे ही यीशु बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया तो यह आकाशवाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूं। क्या कभी आपने इस पर गंभीरता से सोचा है कि बपतिस्मा लेने के बाद ही परमेश्वर ने यीशु को अपना पुत्र घोषित किया था? इस बात में अवश्य ही कोई विशेषता होनी चाहिए।

कलीसिया की आराधना में पढ़े गये पत्र

ब्रूस मैक्लार्टी

नये नियम के कई पत्र कलीसिया की आराधना सभा में पहले पढ़े गए थे (कुलुस्सियों 4:16)। इस बात को ध्यान में रखते हुए कुलुस्से की कलीसिया में उस रविवार की कल्पना करें जब तुखिकुस और उनेसिमुस पौलुस के दो पत्र लेकर पहुंचे थे। पहला पत्र तो पूरी कलीसिया के नाम सामान्य था जबकि दूसरा पत्र उस मसीही फिलेमोन के नाम सीधे था जिसके घर में कलीसिया लगातार इकट्ठा होती थी।

आराधना के लिए कलीसिया के लिए इक्ट्ठा होने पर उस शाम दास और उनके स्वामी सब वहां इक्ट्ठा थे। उनेसिमुस नामक जिसकी लम्बे समय से अनुपस्थिति ने छोटी सी कलीसिया में बातचीत का विषय बना दिया होगा, आश्चर्यजनक वापसी के कारण लोगों का फिलेमोन के घर में पहुंचना आरंभ होते ही तनाव का माहौल बन गया। सब लोगों के आ जाने पर फिलेमोन खड़ा हुआ और हाथ का इशारा करते हुए उसने मण्डली को चुप करवाया। उसने इकट्ठा हुए लोगों को बताया कि तुखिकुस अभी-अभी प्रिय पौलुस की खबर लेकर आया है और उसने सभा का कार्यक्रम उसे सौप दिया।

अगले तीस मिनट तक मण्डली पौलुस के पत्र में से तुखिकुस की एक-एक बात को बड़े ध्यान से सुन रही थी। उसने उन्हें मसीह महानता और यह कि संसार की कोई किसी भी बात को उससे मिलाया नहीं जा सकता उन्हें याद दिलाया। उसके आगे पढ़ते हुए लोगों के हाल की हर प्रकार की आत्मिक उलझन जैसे छूमन्तर हो गई। यीशु का सम्पूर्ण दर्शन उन्हें मिल गया था। परन्तु जल्द ही उसने अपने से बढ़कर प्रभु के साथ संगति की नई ऊंचाईयों पर पहुंचा दिया, जैसा एक प्रचार का कहना था, प्रचार करना बंद करके हस्तक्षेप करना बंद कर दिया।

स्थिति बड़ी नाजुक हो गई थी जब पौलुस ने पतियों, पत्नियों, माता-पिता और फिर बच्चों को संबोधित किया। परन्तु बेचैन करने वाला पल तब आया जब पढ़ने वाले ने दासों और उनके स्वामियों के लिए पौलुस के शब्द कहे। कुलुस्से की कलीसिया के लिए यह केवल सामाजिक बुराइयों पर चर्चा का सार नहीं था। बल्कि यही उनका जीवन था। स्वामी और दास सब कमरे में बैठे हुए थे। उन्हें उनकी जाति, उनके कपड़ों या उनकी दुनियादारी से पहचाना नहीं जा सकता था, फिर भी हर किसी को यह मालूम था कि कौन दास है और कौन स्वामी है। यह बात किसी भी रविवार ही होती होगी परन्तु इस रविवार जागरूपता आम से अधिक थी। उनेसिमुस लम्बी और अक्षम्य अनुपस्थिति से लौटा था और हर कोई यह देखने को बेताब था कि फिलेमोन उसके साथ कैसे पेश आता है।

दासता यानी गुलामी पर पौलुस की बातें सामाजिक संस्थान पर या रोमी सरकार के ढंग के अनुसार नहीं। उसके बजाय वे व्यावहारिक बातों ही से हर मसीही का संबंध मसीह के साथ इस प्रकार से दूसरों के उसके संबंध में बदल जाता है। पूरी कलीसिया के पौलुस के पत्र के साथ-साथ यानी गुलामी के नाजुक विषय को खोलने पर पूरी कलीसिया के एक टक देखने और हृदय की धड़कनें बढ़ जाने की

कल्पना करें। प्रभु की सेवा, प्रतिफल, सेवा और परिणामों पर सच्चाई की बात की समयता से कठिन भाग खत्म हो गया। हर किसी ने चैन की सांस ली जब तुखिकुस ने प्रार्थना की बात पढ़कर पौलुस के व्यक्तिगत अभिवादनों के साथ समाप्त किया।

अनुग्रह तुम्हें मिलता रहे इसके समाप्त करने के थोड़ी देर बाद तुखिकुस ने चर्मपत्र का एक और टुकड़ा उठाया होगा और पढ़ने लगा था। सुनने वालों को समझ आ गया था कि पौलुस ने कुलुस्से की कलीसिया की समस्याओं पर बात खत्म नहीं की हैं। उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए जिसके घर में वे इकट्ठा हुए, उसने लिखा, फिलेमोन। फिर उसने फिलेमोन के घर के दो और लोगों अम्फफिया और अर्खिप्पुस का नाम लिया। कलीसिया के लोगों को लगने लगा कि वे किसी निजी पत्र को पढ़ रहे हैं या किसी की निजी बातचीत को सुन रहे हैं।

सम्बोधन में अंतिम नाम किसी व्यक्ति का नहीं बल्कि घर की कलीसिया का था। इसमें जवान और बूढ़ों, दास और स्वतंत्र, धनवान और निर्धन, नर और नारी सब को शामिल किया गया था। सामने आई समस्या का सामना करने के लिए मिलकर इकट्ठे होने का न्यौता सब को दिया गया था। जिस का उस कलीसिया को परिवार जैसा माहौल लगा जो पहले कभी नहीं लगा था। तुखिकुस के दूसरा पत्र पढ़ने तक भाई और बहनें होने और मसीही की सहिभागिता में साझी होने की बात वास्तविकता बन गई। दास के स्वामी को उसके भगौड़े दास की बात बताई जा रही थी, और पूरी कलीसिया को इस मामले में सहायता करने को कहा गया था। हर मसीही में जिसने उस दिन फिलैमोन के नाम पत्र को सुना था महसूस किया कि मसीही विश्वास चाहे वह बहुत ही निजी है पर यह निजी मामला नहीं है। कलीसिया वास्तव में एक परिवार थी और इस कारण कलीसिया के लोगों का कर्त्तव्य था कि वे अपने विश्वास की चुनौतियों का मिलकर सामना करें।

यह केवल आपका ही नहीं है

यह समझाने के एक रूप के ढंग में कि फिलेमोन और उनेसिमुस का व्यक्तिगत तनाव समकालीन कलीसिया में हो सकता है, टैली, हार्वस और विलियम एच. विलीमोन ने एक जबर्दस्त कहानी बताई है। सॉग नामक एक परेशान पति जिसका विवाह सयू नामक एक शराबी से हुआ था, ने एक दिन अपने प्रचारक को यह बताने के लिए बुलाया कि उसकी पत्नी ने फिर से पी रखी है और उस व्यक्ति ने पिछले सालों में कई बार उसे छोड़ा था परन्तु इस बार उसने फिर से कोशिश करने की सामर्थ या इच्छा नहीं थी। उसकी आशा और धीरज जवाब दे गए थे।

सब दम्पत्तियों की बाइबल क्लास की एक समस्या पर उसने अगले दिन प्रचार को क्यू सयू के शराबी होने, टॉम की निराशा और उस दम्पत्ति की टूट रही शादी की चर्चा करने के लिये बुलाया। परेशान करने वाली बातचीत के कुछ मिनटों बाद एल ने बताया कि इस स्थिति की बात उसे तंग कर रही है। यह पूछने पर कि वह बात क्या हो सकती है उसने ने उत्तर दिया, मुझे यह बात तंग करती है कि उससे इसे अकेले ही सहने की उम्मीद की थी। आगे वह सुझाव देने लगी कि बाइबल क्लास ने उस दम्पत्ति को सहायता करने पर दोष देना चाहिए, हम टॉम पर कोई परेशानी न आने दे। इसके अलावा हस्पताल में शराबियों के लिए अभी अभी एक

नया कार्यक्रम आरंभ किया है। मेरा कहना है कि हम आधा खर्च उठाएं। यह अवलोकन करने के लिए हाअरवस और विलिमोन सही थे, सुसमाचार हम से किसी चीज की मांग नहीं करता करूणा और वचन निभाना, बच्चे जनना, चंगाई लेना इसकी उम्मीद हम से अविवाहितों के रूप में की जाती है। हम परिवार के रूप में रहते, एक कालोनी के रूप में जिसमें टॉम जैसे साधारण लोगों को सही बनाए।

आज कलीसिया के लिए सबसे बड़े सांस्कृतिक खतरों में एक निजवाद है। तुम अपना काम करो आमतौर पर मसीही लोगों के मुंह से सुनने को मिलता है जब कलीसिया के परिवार में से कोई उन पर आई किसी परेशानी के बारे में पूछता है या उनके संदेहास्पद व्यवहार को चुनौती देता है। मैं किसी को परेशान नहीं करता हूं और यह मेरा जीवन है। ऐसी सोच वालों के दो उत्तर होते हैं। ये बातें हमारे समाज में आमतौर पर स्वीकार की जाती है और इस कारण मसीही लोग कई बार यह भूल जाते हैं कि वे मसीही विश्वास के उलट चल रहे हैं।

कलीसिया कोई सम्प्रदाय नहीं हैं जो नियंत्रण अपने हाथ में रखता हो बल्कि एक परिवार है जो प्रोत्साहित करना, कई बार सामना करता और हमेशा प्रेम करता है। जब कोई मसीही व्यक्ति पाप में गिर जाता या निराशा में फिसल जाता है तो मसीह में उसकी परवाह करने वाले भाइयों और बहनों का व्यवहार उसे समस्या से निपटने में हर हाल में सहायता के लिए हो। फिलेमोन के नाम पत्र आज मसीही लोगों को स्मरण दिलाता है कि ....

आपका विवाह केवल आपका नहीं है।
आपकी समस्याएं केवल आपकी नहीं है।
आपका दुर्व्यवहार केवल आपका नहीं है।
आपके घर की समस्याएं केवल आपकी नहीं है।
आपकी परीक्षाएं केवल आपकी नहीं है।
आपका लोभ केवल आपका नहीं है।
आपका गर्भवती होना केवल आपका नहीं है।
काम में आपका व्यवहार केवल आपका नहीं है।
आपका झूठ बोलना केवल आपका नहीं है।
आपका परेशान होना केवल आपका नहीं है।
आपकी मृत्यु केवल आपकी नहीं है, क्योंकि आप कलीसिया के साथ जुड़े हुए हैं।

थिस्सलुनीकियों के मसीहीयों को चुने जाने का निश्चय (1 थिस्स. 1 अध्याय)

अर्ल ऐड्वर्डस

क्योंकि हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास न केवल शब्द मात्र ही में वरन सामर्थ्य और पवित्र आत्मा में, और बड़े निश्चय के साथ पहुंचा है, जैसा तुम जानते हो कि हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे। तुम बड़े क्लेश में, पवित्र आत्मा के

आनन्द के साथ, वचन को मानकर हमारी और प्रभु की सी चाल चलने लगे। यहां तक कि मकिदुनिया और अख्या के सब विश्वासियों के लिये तुम आदर्श बने।

आयत 5. सुसमाचार शब्द का अर्थ है खुशखबरी। इस विषय में सुसमाचार मसीह के द्वारा हमारे पापों से बच जाने की संभावना है। इसलिए सबसे पहले यह सुसमाचार परमेश्वर का (2:8, 9) यह पौलुस और तीमुथियुस का भी है इस भाव में कि इन व्यक्तियों ने इसे ग्रहण किया, इसका अभ्यास किया और इसका प्रचार किया। सुसमाचार उनके जीवन का एक अंग बन गया था। इसके मूलभूत तत्व (1 कुरिन्थियों 15:1-11) वही हैं जो अन्य सत्यनिष्ठ प्रचारकों के द्वारा प्रचार किया गया था (प्रेरितों के काम 2:22-36 से तुलना करें)। यह तत्व स्पष्ट रूप से वचन में घोषित किए गए, परन्तु उनका प्रचार सामर्थ्य के साथ था जब उन्होंने प्रस्तुत किया (प्रेरितों के काम 17:1-9), यहां तक कि उस स्तर पर भी जहां बड़ी संख्या में ईश्वर का भय मानने वाले यूनानी लोग आश्वस्त हुए थे। वास्तव में सामर्थ्य यूनानी शब्द डुनामिस के अनुवाद से किया गया है और इसका अर्थ संदेश के शब्द मात्र में छपा नहीं है परन्तु अर्थपूर्ण रीति से सामर्थ्य के साथ भी है, अर्थात संदेश के पीछे ईश्वरीय वास्तविकता है। इस तरह से पौलुस संभवत: परमेश्वर के आचरण का उल्लेख कर रहा था जिससे उनको प्रभावशाली ढंग से प्रचार करने में परमेश्वर ने सहायता की। उनके शब्द खोखली बातें नहीं थी; परन्तु उनमें बड़े निश्चय की गूंज थी। यह सामर्थ्य पवित्र आत्मा के साथ भी जुड़ी हुई थी, संभवत: उन आश्चर्यकर्मों का उल्लेख कर रही थी जो प्रस्तुति के समय पौलुस ने किए जिसने परमेश्वर की उपस्थिति को प्रचार के वचनों में उसकी पुष्टि की (देखें 1 कुरिन्थियों 2:4,5; 2 कुरिन्थियों 12:12; इब्रानियों 2:1-4)।

आगे चलकर उसने बताया थिस्सलुनीकियों के साथ रहते हुए उसने कैसा आचरण किया था। इस पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि पौलुस ने कहा कि भाई जानते थे हम तुम्हारे लिये तुम्हारे बीच में कैसे बन गए थे। इस में स्वयं बचाव का भाव है, जो कि दूसरे अध्याय में पूर्ण रूप से विकसित हो गया था। पौलुस और उसके सहकर्मियों ने स्वयं के स्वार्थ के लिए कुछ नहीं किया था; इसके बजाय उन्होंने सब कुछ वहां के लोगों के लिए किया था। उन दिनों में बहुत से चलते फिरते प्रचारकों के जीवन से उनका जीवन पूर्ण रूप से भिन्न था। इसलिए, उसके चुने जाने की निश्चितता का भाग इस तथ्य से आया कि नैतिक रूप से शुद्ध और निष्ठावान व्यक्तियों ने पवित्र आत्मा समर्थित प्रचार किया। परन्तु उसकी निश्चितता का दूसरा कारण था, अर्थात जिस तरीके से थिस्सलुनीकियों ने संदेश को प्राप्त किया था (देखें आयत 6)।

आयत 6... की सी चाल चलने वाले वे लोग हैं जो दूसरों को देखते हैं, उस व्यक्ति को आदर्श के रूप में प्रयोग करने का प्रयास करते हैं। क्योंकि पौलुस जानता था कि वह सत्यनिष्ठा से प्रभु के लिए जीने का प्रयास कर रहा था (1 कुरिन्थियों 4:4), वह दूसरों को कह सका कि वे उसका अनुसरण करें (1 कुरिन्थियों 11:1) और विशेष रूप से यीशु की सी चाल चलें। थिस्सलुनीकियों

ने पौलुस और उसके सहकर्मियों का अनुसरण करने का प्रयास किया; परन्तु उनके द्वारा वे वास्तव में प्रभु यीशु का अनुसरण कर रहे थे, क्योंकि पौलुस बड़ी चौकसी से प्रभु के आदर्श का अनुसरण कर रहा था (1 कुरिन्थियों 11:1; 4:16) हमारे परिवर्तित विश्वासी सहज रूप से हमारा अनुसरण करेंगे। क्या वे राज्य को पहले और परमेश्वर के लिए त्याग को पहले रखा हुआ पाएंगे या वे इस बात को देखेंगे कि हमारी शिक्षा मात्र शब्द ही है, सांसारिक बातें पहले आती हैं और बड़ी कठिनाई से त्याग के अर्थ को समझते हैं? मसीहियत के सच्चे शिक्षकों को अपने वचनों के साथ-साथ अपने जीवनों से सिखाना चाहिए।

यह भाई बड़े क्लेश में होने के बावजूद भी विश्वासयोग्यता में बने रहे, आमतौर पर इसलिए कि उनके पास अनुसरण करने के लिए एक अच्छा आदर्श था। यह वाक्य कठिन समय का संकेत करता है। उनके सताव का स्रोत संभवत: यहूदी लोग ही थे (प्रेरितों के काम 17:5-9) और भी संभव है उनके संगी यूनानी लोग (2:14 देखें, 2 तीमुथियुस 3:12)।

पवित्र आत्मा के आनन्द यह संकेत करता है कि जब कोई व्यक्ति परमेश्वर के संदेश की आज्ञाकारिता के लिए अपना हृदय खोलता है, पवित्र आत्मा किसी तरह से आनन्द देता है। वास्तव में, यह जानना आनन्द की बात है कि हमारा अब हमारे सृजनहार के साथ मेल हो गया है और हम उसका सामना कर सकते हैं जिसका सामना हमें करना है। प्रेरितों के काम में नए विश्वासियों के द्वारा आनन्द के अनुभव के विवरण पर ध्यान दें (प्रेरितों के काम 8:39; 16:34)।

यह आनन्द जो थिस्सलुनीकियों ने महसूस किया था उनके दु:ख पर प्रबल हो गया था, जो कि सताव की पीड़ा के साथ आया था। उनकी आंतरिक शांति जीवन के बाहरी परिस्थिति पर कहीं अधिक भारी थी (रोमियों 8:18) से तुलना करें।

वह ढंग जिसमें उन्होंने संदेश को प्राप्त किया था, जिसके परिणामस्वरूप आनन्द आया जो कि पवित्र आत्मा ने उनके हृदयों में उण्डेला था, एक अन्य कारण बन गया था कि क्यों पौलुस इतना निश्चित था कि वे चुने हुओं में से हैं।

आयत 7 पौलुस के समय में, मकिदुनिया और अख्या रोमी साम्राज्य के दो प्रांत थे। अख्या दक्षिणी भाग था जिसे आज हम यूनान (ग्रीस) कहते हैं जिसमें कुरिन्थुस और अथेने शामिल है। मकिदुनिया मुख्य रूप से उत्तरी भाग था जिसे अब हम यूनान (ग्रीस) कहते हैं इसमें बिरिया, फिलिप्पी, और थिस्सलुनीके शामिल थे। पौलुस ने कहा थिस्सलुनीके के विश्वासी पहले अनुसरण करने वाले बने (आयत 6) उसका और उसके सहकर्मी और फिर वे स्वयं एक उदाहरण या आदर्श बने, आस पास के क्षेत्र के विश्वासियों के लिए। उदाहरण शब्द टूपोस से आता है, जिसका अर्थ है चोट से निशान बनाना, निशान जैसा यूहन्ना 20:25 में है, एक उदाहरण या एक नमूना। जैसा कि पहले ही देखा गया है, उन्होंने पौलुस का अनुसरण किया जैसे उसने मसीह का अनुसरण किया (1 कुरिन्थियों 11:1)।

प्रभु यीशु का अनुसरण करने में किसी का स्तर और प्रभु के विश्वायोग्य

सेवक एक वह स्तर है जिसके लिए वह एक उदाहरण है जो तब उत्साहित करेगा और अन्य लोगों को प्रभावित करेगा। थिस्सलुनीकियों ने संभवत: तो यह भी महसूस नहीं किया होगा कि उनका उदाहरण दूसरों के लिए कितना उत्साहवर्धक था, परन्तु लोगों का उदाहरण दूसरे लोगों पर हमेशा ही प्रभाव छोड़ता है, चाहे वह अच्छा हो या बुरा। उनके उदाहरण ने सारे मकिदुनिया के और अख्या के सैंकड़ों विश्वासियों को प्रभावित किया। नये नियम में यही एक मात्र कलीसिया है जिसको दूसरों के लिए आदर्श कहा गया है। यह विश्वासी निसंदेह, वे थे जिन्होंने सुसमाचार का पालन किया था। वे जिन्होंने प्रेरितों के काम 2:41 में बपतिस्मा लिया था उनको आयत 44 में विश्वासी कहा गया।

परमेश्वर और मनुष्य जाति का कष्ट

फ्रेंक पैक

बाइबल के परमेश्वर में विश्वास करने वालों के कारण हमारी सबसे बड़ी समस्या मानवीय कष्ट को समझना है। जिस परमेश्वर को बाइबल इतना भला और प्रेम करने वाला दिखाने के साथ-साथ इतना शक्तिशाली दिखाती है, वह संसार में अपने जीवों पर कष्ट कैसे आने दे सकता है? क्या परमेश्वर को सचमुच ही उनकी चिंता है? वह युद्ध का आंतक क्यों होने देता है? निर्दोष लोगों पर इतना कष्ट क्यों आता है? बीमारी से इतना कष्ठ क्यों होता है? विकृत या मंदबुद्धि बच्चों का जन्म क्यों होता है? ये और ऐसे कई और प्रश्न हैं जो न केवल कलीसिया के बाहर के लोग ही नहीं बल्कि स्वयं मसीही लोग भी पूछते हैं। यह समस्या इतना भयानक रूप ले सकती है जिससे कई लोगों के विश्वास मनुष्य जाति के कष्ट की चट्टानों पर मलबे की परत की तरह जमे हैं। हो सकता है कि हमें इस समस्या का उपयुक्त समाधान न मिल पाए, परन्तु ऐसा भी हो सकता है कि इस अध्ययन से दूसरे लोगों के संघर्ष कुछ कम हो सकें और हम में से हर एक को और गहराई से मनुष्य जाति के कष्ट की समझ आ जाए।

दुख में न केवल शारीरिक पीड़ा, बल्कि हताशा, मानसिक तनाव, वियोग, और मानवीय हृदय की समस्याएं भी आती हैं। ये संघर्ष विध्वंसकारी तेजी से आ सकते हैं, या हमारी आत्माओं पर धीरे-धीरे काबू भी पा सकते हैं।

मसीही बनने से कष्ट की समस्या का समाधान करना आसान नहीं, बल्कि और कठिन हो जाता है। परमेश्वर में विश्वास न करने वाले को कष्ट और त्रासदी की समस्या का व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। यदि संसार का कोई अर्थ न होता, बल्कि यह केवल एक मुर्दा मशीन होती, तो इसे मानवीय जीवों की चिंता कैसे हो सकती थी? ऐसे संसार को यह चिंता नहीं होनी थी कि लोग कष्ट में हैं या नहीं, क्योंकि इसमें चिंता करने की क्षमता नहीं होनी थी। बिना अर्थ के संसार में, यह जानने की कोई आवश्यकता न होती कि निर्दोष लोगों पर कष्ट क्यों आता है। यह तथ्य कि कोई एक व्यक्तिगत परमेश्वर में विश्वास करता है, जो छुटकारा

देने वाला है, अपने आपको देने वाला है, प्रेम करने वाला है, और मनुष्य से असीम लगाव रखता है, समस्या की गंभीरता को बढ़ा देता है। परन्तु नास्तिक व्यक्ति को परमेश्वर के अस्तित्व का इंकार करके हर समस्या से छुटकारा नहीं मिल जाता। हो सकता है कि उसे संसार में कष्ट या बुराई का हिसाब न देना पड़े, परन्तु उसे नि:स्वार्थ जीवन, भलाई तथा ऐसे लोगों के शौर्य का कारण बताने में इससे भी बड़ी समस्या आती है जो दूसरों के लिए जीते और मरते हैं। वह उन लोगों की निष्कपटता के बारे में कह सकता है जो इसी सोच में मरते हैं कि वे सही ही हैं? ये वे लोग हैं जिन्हें संसार अपने महानतम नायकों, मनुष्य जाति के सबसे अच्छे ऐतिहासिक उदाहरणों के रूप में सम्मान देता हैं यदि मनुष्य के भलाई तथा शौर्य के गुण केवल अचानक इक्ट्ठे हुए अणुओं का परिणाम है, तो इसकी कोई व्याख्या नहीं दी जा सकती है और न ही संसार के अस्तित्व का कोई तर्क रह जाता है। इस कारण संसार में अर्थ के बारे में मनुष्य के सभी तर्क व्यर्थ हो जाते हैं। अविश्वासी व्यक्ति एक समस्या से तो छुटकारा पा लेता है, परन्तु उसके लिए उससे भी बड़ी और समस्या खड़ी हो जाती है।

कुछ गलत समाधान

कष्ट की समस्या के लिए कौन से गलत समाधानों का सुझाव दिया जाता है?

कष्ट भ्रम है

फिलॉसफी के आदर्शवादियों और मेरी बेकर एडी द्वारा प्रचारित एक समाधान यह है कि हर प्रकार का कष्ट एक भ्रम है। इस विचार के अनुसार, कष्ट और दुख हमारे विकृत मनों की उपज हैं और मन से बाहर उनका अस्तित्व हो नहीं सकता। यदि बुराई का प्रत्येक अनुभव काल्पनिक है, तो यह निरीक्षक के मन में ही हो सकता है और एक यथार्थ वास्तविकता का भाग नहीं हो सकता। इस प्रकार भ्रमित सोच और कष्ट को एक ही माना जाता है। जितनी जल्दी कोई व्यक्ति अपने कष्ट के बारे में अपनी सोच को सुधार लेता है, उतनी ही जल्दी उसका कष्ट दूर हो जाता है।

यह कहना बेतुका है कि संसार में हर एक दुखांत केवल काल्पनिक ही है। यदि ऐसा हो सकता है, तो हमारा संसार ऐसा है जिसमें डरावनी समस्याओं की कल्पना करने वाले दिमाग रहते हैं और यह अपने आप में ही एक परेशान करने वाली बुराई बन जाता है। यदि बुराई वास्तव में है ही नहीं, तो दिमाग ऐसी बुराइयों की कल्पना ही क्यों करेगा? किसी दुर्घटना में जिसकी आंखें चली गई हैं, उसे यह कहना बेतुका है, तेरा अंधापन वास्तविक नहीं है; यह तो केवल तू ऐसा सोचता है। उस मां और बाप को जिनका बेटा खो गया हो यह कहना बेतुका है, आपकी यह केवल कल्पना ही है कि आपका बेटा मर गया है। आपका कष्ट केवल एक भ्रम है; आपका बेटा मरा नहीं है।''

बाइबल में विश्वास करने वाले लोग जानते हैं कि कष्ट हमारे प्रभु यीशु मसीह के सिर में गढ़े कांटों और उसके शरीर में ठुकी कीलों की तरह वास्तविक है। हम भी पीड़ा के संबंध में इस झूठी धारणा को समर्थन करने के लिए कह सकते हैं

कि चेलों का यह सोचना गलत था कि यीशु ने कष्ट सहा और वह क्रूस पर मरा था और यह कि सुसमाचार अपने आप में ही बुरी कल्पनाओं का परिणाम है। दोनों एक ही विचार का भाग है।

परमेश्वर की सीमा है

समस्या की इतनी गहराई से अलग प्रस्ताव उठता है कि सीमित परमेश्वर की धारणा में यह अपनी व्याख्या को ढूंढ़ने का यत्न करता है। विचार यह है कि परमेश्वर चाहे धर्म का भला और अच्छा समर्थक है, परन्तु अपनी इच्छा को पूरी तरह से पूरा करने में अपर्याप्त है। उसे उन दुष्ट शक्तियों के सामने जिनके विरूद्ध वह संसार से लड़ रहा है, सीमित कहा जाता है। उनकी फिलासिफी में यह बात है कि परमेश्वर की अनन्त इच्छा के सामने ऐसी रूकावटें आती हैं जो उसने अपनी इच्छा से नहीं बनाई हैं और ये रूकावटें उसे अपनी इच्छा को पूरा करने में बाधा डालती हैं। वे हमसे यह विश्वास करवाना चाहते हैं कि परमेश्वर अपनी पूरी शक्ति से बुराई का विरोध और संसार को अच्छा बनाने का यत्न कर रहा है, परन्तु उसकी सीमा है। उन्हें लगता है कि परमेश्वर को हमारी सहायता की आवश्यकता है क्योंकि सांसारिक संघर्षों के परिणामों का क्या पता कि किस के पक्ष में जाएं। उनके विचार से प्रत्येक व्यक्ति जो परमेश्वर की ओर से लड़ रहा है, वह उस संघर्ष में उसकी शक्ति को बढ़ा रहा है जिससे धर्मियों के लिए विजय संभव हो सके।

हम देख सकते हैं कि यह विचार संसार में व्याप्त बुराई का जवाब नहीं देता, बल्कि एक ऐसे परमेश्वर के संघर्ष की व्याख्या करने का यत्न करता है जो बाहरी शक्तियों के विरोध के कारण पूरी तरह से अपनी इच्छा को पूरा करने में असमर्थ हो। बोस्टन यूनिवर्सिटी के.ई.एस. ब्राइटमैन के समर्थक बहुत से आधुनिक फिलॉसफर इस विचार का समर्थन करते हैं, परन्तु इससे कभी समस्या का समाधान नहीं निकला। सीमित परमेश्वर की धारणा बाइबल की इस शिक्षा का विरोध करती है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है और अपने उद्देश्यों को संसार में पूरा करने में पूरी तरह समर्थ है, क्योंकि परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है (मत्ती 19:26)।

हर कष्ट का कारण पाप ही है

मानवीय कष्ट की समस्या का तीसरा गलत समाधान यह विचार है कि कष्ट हमेशा व्यक्ति के अपने पाप के कारण ही आता है। इस विचार में एक सच्चाई यह है कि कष्ट पाप से आता है। आज संसार की अधिकतर पीड़ा उन लोगों की बुराई तथा स्वार्थ का परिणाम है जो युगों से दुष्टता पर तुले हुए हैं। जब हम गलत काम करके दुख उठाते हैं, तो हमें यह समझने में थोड़ा कष्ट होना चाहिए कि हमें दुख क्यों उठाना पड़ें। परन्तु इससे हर बात का खुलासा नहीं होता है। इसमें निर्दोष को कष्ट उठाने का कारण पता नहीं चलता। यह कहना सही नहीं है कि जैसे किसी व्यक्ति की समस्याएं उसकी किसी बड़ी गलती के दण्ड के लिए हो वैसे ही हर प्रकार का कष्ट पाप के कारण है।

अय्यूब के साथियों ने उस पर किसी गुप्त बुराई का आरोप लगाकर जिससे उस पर कष्ट आया था, गलती की। उन्होंने उसे राख में बैठे, बीमारी और पीड़ा से

कराहते, उसकी पत्नी को उसके विरूद्ध होने, उसके परिवार के मर जाने, और उसकी सम्पत्ति के छिन जाने को देखा था। उसके परिवार पर आपत्ति एकदम आ गई थी। अय्यूब तूने अवश्य कोई घोर पाप किया होगा, वरना तुझे इतना कष्ट न उठाना पड़ता उसके मित्र ने कहा मन फिरा और अपना पाप मान ले, क्या पता परमेश्वर अपने चेहरे को फिर से तेरी ओर कर ले। अय्यूब की पुस्तक का अधिकतर भाग इन आरोपों के विरोध में है, जिसमें उसने अपने धर्मी होने की रक्षा की और अपने कष्ट की इस गलत धारण को मानने से इंकार किया था। ऐसे संघर्ष से उसकी समस्याओं के बारे में एक गंभीर समझ मिलती है।

नये नियम में यीशु ने बताया कि पिलातुस ने जिन लोगों का लहू उनके बलिदानों में मिला दिया था वे किसी भी प्रकार देश में रहने वाले दूसरे लोगों से बुरे नहीं थे।

क्या तुम समझते हो, कि ये गलीली, और सब गलीलियों से पापी थे कि उन पर ऐसी विपत्ति पड़ी? मैं तुम से कहता हूं कि नहीं, परन्तु यदि तुम मन न फिराओगे तो तुम सब भी इसी रीति से नाश होगे। या क्या तुम समझते हो, कि वे अठारह जन जिन पर शीलोह का गुम्मट गिरा और वे दब कर मर गए, यरूशलेम के और सब रहने वालों से अधिक अपराधी थे? मैं तुम से कहता हूं कि नहीं; परन्तु यदि तुम मन न फिराओ तो तुम भी सब इसी रीति से नाश होगे (लूका 13:2-5)।

स्पष्ट भाषा में, हमारे प्रभु ने इस विचार को नकार दिया कि कष्ट हमेशा इससे पीड़ित होने वालों की बुराई के कारण ही आते हैं।

एक और अवसर, पर जन्म के अंधे को देखकर चेलों ने यीशु से पूछा था, हे रब्बी, किसने पाप किया था कि यह अंधा जन्मा, इस मनुष्य ने या उसके माता-पिता ने? यीशु ने उत्तर दिया, न तो इसने पाप किया था न इसके माता-पिता ने परन्तु यह इसलिए हुआ कि परमेश्वर के काम उसमें प्रकट हो (यूहन्ना 9:2, 3)। वह व्यक्ति न तो अपने माता-पिता और न ही अपने पाप के कारण अंधा पैदा हुआ था। मसीह का अपना कष्ट इस विचार को नकारने के लिए काफी होना चाहिए कि सब प्रकार के कष्ट किसी के पापों के दण्ड स्वरूप मिलते हैं, क्योंकि पवित्र शास्त्र स्पष्ट सिखाता है कि उसने कोई पाप न किया (1 पतरस 2:22)। फिर भी, उस निर्दोष ने दोषियों के लिए कष्ट सहा ताकि वह हमें छुड़ा लें। पाप से कष्ट तो आ सकता है, परन्तु इससे यह पता नहीं चलता कि हर प्रकार का कष्ट कैसे आता है, न ही बाइबल इस बात को कष्ट के कारण स्वीकार करती है। मसीही लोगों को यह समझ होनी चाहिए।

अब जबकि हमने कुछ गलत समाधानों पर ध्यान दिया है, तो हमें यह मानना चाहिए कि मनुष्य जाति के कष्ट की समस्या के सम्पूर्ण समाधान तक पहुंचने का दावा कोई भी नहीं कर सकता है। इस प्रश्न के बहुत से पहलू हमारी सामर्थ व समझ से बाहर है। न ही हमारे लिये इस विषय को इस पाठ में समेट पाना संभव है। परन्तु हो सकता है कि कष्टों पर सुझाए गए विचार उन कष्टों पर जो हम सहते हैं और जिन्हें हम दूसरों के जीवन में देखते हैं, हमारे मन को रोशन करे।

विश्वास और कष्ट को एक करने में संघर्षरत लोग इस समस्या को इस प्रकार

व्यक्त करते हैं, यदि परमेश्वर भला है, वह मनुष्यों को प्रसन्न देखना चाहता है और यदि वह सर्वशक्तिमान है, तो वह अपनी इच्छा के अनुसार जो चाहे कर सकता है।

सारा का विश्वास

सूज़ी फ्रैड्रिक

बाइबल हमें अनेकों पुरुषों और स्त्रियों के विषय में बताती है, जिन्होंने अपने अच्छे जीवन के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न किया था। हमें इनके उदाहरणों से सीखना चाहिये ताकि हम भी अपने जीवनों से उसे प्रसन्न कर सकें। सबसे पहिला कदम जो परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिये होना चाहिये वो है अपने विश्वास में आगे बढ़ना। बाइबल में इब्रानियों का लेखक कहता है, ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है, और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है। (इब्रानियों 11:6)। परमेश्वर में जो हमारा विश्वास है उसमें क्या-क्या शामिल होना चाहिये? आईये बाइबल की उस महान स्त्री के विषय में देखें जिसका विश्वास बहुत शक्तिशाली था।

सारा का विश्वास परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं में था। परमेश्वर ने इब्राहिम तथा सारा से यह प्रतिज्ञा की थी कि उनके यहां एक पुत्र का जन्म होगा, तथा उससे वह एक बड़ी जाति बनाएगा और भूमण्डल के सारे कुल उसके द्वारा आशिष पाएंगे (उत्पत्ति 12:3)। जैसे-जैसे समय बीतता गया, सारा बूढ़ी और बांझ थी, परन्तु परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा फिर से दोहराई और कहा कि, उनके पास एक पुत्र उत्पन्न होगा। (उत्पत्ति 18:10)। क्योंकि सारा इस समय बूढ़ी थी इसलिये जब उसने पुत्र के जन्म के विषय में सुना तो वह अपने आप में हंसी। परन्तु परमेश्वर ने कहा, ''क्या यहोवा के लिये कोई काम कठिन है?'' (उत्पत्ति 18:14)। जैसे परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी ठीक वैसे ही उनके यहां इसहाक का जन्म हुआ। (उत्पत्ति 21:2)। इब्रानियों 11:11 में हम पढ़ते हैं कि, ''विश्वास से सारा ने आप बूढ़ी होने पर भी गर्भ धारण करने की सामर्थ पाई, क्योंकि उसने प्रतिज्ञा करने वाले को सच्चा जाना था।''

अपने लिखित वचन बाइबल के द्वारा परमेश्वर ने हमसे कई प्रतिज्ञाएं की हैं। पुराने नियम के कई पद हमें प्रभु यीशु मसीह के आने के विषय में बताते हैं। प्रभु यीशु मसीह सारा और इब्राहीम के वंश से था जो सारे धार्मिक संसार के लिये एक आशीष का कारण बना। परमेश्वर ने उस प्रतिज्ञा को तब पूरा किया जब यीशु ने इस पृथ्वी पर जन्म लिया ताकि वह एक सिद्ध मनुष्य का जीवन व्यतित करके सारे संसार के पापों के लिये एक सिद्ध बलिदान दे सके। अब परमेश्वर हमसे प्रतिज्ञा करता है, अर्थात उनसे जो लोग मसीही युग में रहते हैं, उनके लिये पापों की क्षमा तथा अनन्त जीवन है। यह प्रतिज्ञाएं कुछ शर्तों पर आधारित है अर्थात हमें यह विश्वास करना है कि प्रभु यीशु परमेश्वर का पुत्र है तथा उसकी आज्ञा को मानना है, उसने कहा था ''जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा (मरकुस 16:16)। सारा के विश्वास पर परमेश्वर ने

जो उससे प्रतिज्ञा की थी उसने उसे पूरा किया। यदि हमारा विश्वास सच्चा है तो परमेश्वर ने हमसे जो प्रतिज्ञा की है उसे वह पूरा करेगा। आज संसार में सब तरफ़ अविश्वास के बीज बोये जा रहे हैं। परन्तु आप उस महान परमेश्वर की बनाई हुई एक सुन्दर रचना हैं। यह अपने आप में एक बहुत बड़ा प्रमाण है। आपके अन्दर जो आत्मिक भूख और विश्वास है वो दूसरे प्राणियों में नहीं है। इस सब को मध्यनज़र रखते हुए आपका विश्वास परमेश्वर में प्रतिदिन और दृण होना चाहिए।

आज्ञा-मानना

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

यदि एक बालक अपने पिता से कहे कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, पर पिता की आज्ञा पर न चले, तो अपने कामों से वोह अपने प्रेम के दावे को झूठा साबित करता है। (मत्ती 21:28-31)। परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह से प्रेम करने का अर्थ है, वोह सब करना जो उन्होंने आज्ञा दी है। बाइबल में लिखा है: "क्योंकि परमेश्वर से प्रेम रखना यह है कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें।" (1 यूहन्ना 5:3; 1 यहून्ना 2:5; 2 यूहन्ना 6)। यीशु, ने कहा था: "यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।" (यूहन्ना 14:15; यूहन्ना 15:10); सत्य को मानने से हम अपने मन को पवित्र करते हैं। (1 पतरस 1:22)। जो परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं केवल वही उद्धार पाएंगे (इब्रानियों 5:9; प्रेरितों 10:34, 35)। जो लोग यीशु मसीह के सुसमाचार को नहीं मानते परमेश्वर उनका न्याय करेगा। (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

सिर्फ़ यह कह देने भर से कि मैं यीशु में विश्वास करता हूं या मैं उसका अनुयायी हूं, कोई वास्तव में एक मसीही नहीं बन जाता। जैसा कि यीशु ने कहा था: "जो मुझसे 'हे प्रभु, हे प्रभु' कहता है, उनमें से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश न करेगा, परन्तु वही जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" (मत्ती 7:21)। परमेश्वर की आज्ञाओं को मानना कोई कठिन कार्य नहीं है। पर जो लोग उद्धार पाकर स्वर्ग में प्रवेश करने की इच्छा रखते हैं वे परमेश्वर की हर एक आज्ञा को मानने में सदैव तत्पर रहते हैं। यूहन्ना ने लिखकर कहा था कि "उसकी आज्ञा कठिन नहीं है।" (1 यूहन्ना 5:3)। यदि मनुष्य इस बात पर विचार करके देखे कि मसीह यीशु ने हम सबके लिए कितना कुछ किया है; वोह स्वर्ग छोड़कर पृथ्वी पर आया था और हम सबके उद्धार के लिए उसने क्रूस पर अपनी जान दी थी; तो कोई भी व्यक्ति प्रसन्नतापूर्वक उसकी आज्ञाओं को मानेगा।

भक्तिपूर्ण जीवन बिताएं (रोमियों 13:11-14)

डेविड रोपर

इससे हम इस पाठ के परिचय में दोहराई गई आयत में आ गए हैं, और समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि

जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निकट हैं (आयत 11)। जैसा कि कहा गया है, ऐसा ही करो का अर्थ अभी-अभी दी गई प्रेम करने की चेतावनी हो सकता है या इसका अर्थ अध्याय 12 के आरंभ से लेकर अब तक कही गई पौलुस की हर बात हो सकता है। भक्तिपूर्ण जीवन बिताने के संबंध में प्रेरित जो कुछ कहने वाला था यह इसका उद्देश्य हो सकता हैं डेल हार्डमैन ने लिखा है कि रोमियों से लेकर यहूदा तक सब पत्रियों में मुख्यतया भक्तिपूर्ण जीवन की बात है। अगली आयतें इसका जबर्दस्त प्रदर्शन है।

समय क्या है?

पौलुस ने माता-पिता द्वारा बच्चे को जगाने और फिर उसे दिन भर का काम बताने के रूप का इस्तेमाल किया। इस भाग का आरंभ समय को पहचान कर ऐसा ही करो, इसलिए कि अब तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है (आयत 11क)। टीकाकार, विशेष, समय और घड़ी को पहचानने का प्रयास करते हैं। नीरो द्वारा मसीही लोगों के सताव से लेकर यरूशलेम के विनाश के समय तक के अनुमान लगाए जाते हैं। यह वाक्यांश शायद जान-बूझ कर अस्पष्ट है ताकि यह शब्द आज भी उतने उपयुक्त हो जितने पौलुस के समय थे। आत्मिक तौर पर सोये होने के बारे में, हम जल्दी से जाग नहीं सकते और देर से उठ नहीं सकते। जाग उठने का समय हमेशा अभी रहता है। मैं बिस्तर पर सो रहे लड़के को सहलाते हुए उसे जोर से यह कहने की कल्पना कर सकता हूं उठने का समय हो गया है।

पौलुस ने आयत 11 में आगे कहा तुम्हारे लिए नींद से जाग उठने की घड़ी आ पहुंची है, क्योंकि जिस समय हमने विश्वास किया था, उस समय के विचार से अब हमारा उद्धार निश्चित है। जैसा कि परिचय में कहा गया था, यहां पर उद्धार का अर्थ स्वर्ग में मिलने वाला अंतिम उद्धार है (देखें 1 पतरस 1:5)। प्रभु के वापस आने पर ही हमें यह उद्धार मिलेगा (देखें इब्रानियों 9:28), इसलिए जो जिस समय विश्वास किया था, उस समय के विचार से, निकट है। जिस समय हमने विश्वास किया था इसका अर्थ यह है कि जब हम मसीह में विश्वासी बने थे। हम विश्वास में बने रहते हैं, इसलिए कुछ अनुवादों में पहले शब्द जोड़ा गया है, जैसे पहले के समय के विचार से जब हमने विश्वास किया था पौलुस उन्हें (यह याद दिलाते हुए कि जब पहले उन्होंने विश्वास किया उनकी आशा उनके आने वाले उद्धार का पूर्वानुमान लगाते हुए स्मरण दिला रहा था। आर.सी. बेल्ल ने इसे पौलुस की दबाओं और खींचों प्रेरणा कहा है। पौलुस के शब्दों में उसके पाठकों के लिए जाग उठने की आवश्यकता का संकेत है क्योंकि मसीह किसी भी समय आ सकता था। यदि वे आत्मिक तौर पर सोये रहते तो उन्होंने उसके वापस आने के लिए तैयार नहीं होना था।

प्रभु वापस कब आएगा? यीशु ने कहा, उस दिन या उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत और न पुत्र, परन्तु केवल पिता (मरकुस 13:32) पौलुस को सही-सही समय का तो पता नहीं था, लेकिन उसे यह पता था वह समय उस समय से निकट था जब उसके पाठकों ने बपतिस्मा लिया था। यदि प्रेरित के समय यह था, तो आज हमारे समय में उससे भी अधिक सच है। द्वितीय आगमन पौलुस द्वारा रोमियों की पत्री लिखे जाने के लगभग दो हजार वर्ष पहले लिखे जाने के बाद और नजदीक आ गया है।

आयत 12 मैं पौलुस ने जाग उठने पर प्रवचन देना जारी रखा, रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने पर है (रोमियों 13:12क)। रात-दिन की पहचान करने में टीकाकार बहुत सृजनात्मकता दिखाते हैं, परन्तु पौलुस ने संभवतया अपनी एकरूपता को जारी रखा था। हमारे घराने में, जब रात बहुत बीत गई है, और दिन निकलने को है का अर्थ केवल यह है कि उठकर काम

में लग जाने का समय आ गया। मेरे दिमाग में पिता द्वारा पुत्र को यह कहते हुए कि उठने का समय हो गया है बिस्तर से हिलाने का दृश्य आता है। मैं पुत्र को बुड़बुड़ाते हुए अपनी चादर खींचते देख सकता हूं, डैडी, पांच मिनट और सो लेने दो। (हां ऐसा दृश्य मैंने अपने समय में देखा है)। पिता उत्तर देता है, एक पल भी नहीं। अभी उठो। पौलुस के कहने का अर्थ यही था।

हम क्या करें (आयतें 12ख-14)

उठकर अपनी आंखें धोने के बाद हम क्या करते हैं। उसके बाद पौलुस ने कहा कि हमें कपड़े पहनने हैं, इसलिए हम अंधकार के कामों को तज कर ज्योति के हथियार बांध लें, (आयत 12ख)। पौलुस आमतौर पर कपड़े उतारने और पहनने की तरह व्यवहार को उतारने और पहनने के रूपक का इस्तेमाल करता था (इफिसियों 4:22-24, कुलुस्सियों 3:8-10)। रोमियों 13:12 में वास्तव में हमें सोने के कपड़े उतारकर दिन को कामकाज करने के उपुयक्त कपड़े पहनने की चुनौती दी गई है।

अंधकार के कामों वाक्यांश पाप पूर्ण कार्यों का संकेत हैं वे अंधकार के काम इसलिए है क्योंकि ज्यादातर वे रात के समय किए जाते हैं या अंधेरे में छुपकर किए जाते हैं (देखें यूहनना 3:19, 1 थिस्सलुनीकियों 5:7)। यह भूलें कि पौलुस मसीही लोगों से बात कर रहा था। कया मसीही लोग कभी अनैतिकता के भूखे नहीं होते? हां, होते हैं और जब वे गलती करते हैं तो उन्हें चुनौती दिए जाने की आवश्यकता है, उस बुराई को अपने जीवन से निकाल दो। उससे पीछा छुड़ाओ, उन बातों से दूर भागों जिन्हें लोग अंधेरे में करते हैं (रोमियों 13:12; फिलिप्स)।

बेशक रात को पहनने वाले कपड़े उतारना ही काफी नहीं है, हमारे लिए दिन वाले कपड़े पहनना भी जरूरी है। पौलुस ने ज्योति के हथियार बांध लेने के लिए कहा। अपने बहुवचन रूप में अनुवादित शब्द हथियार का अर्थ युद्ध के हथियार है। रोमियों 6:13 में अधर्म के हथियार और धर्म के हथियार वाक्यांशों में इसी शब्द का इस्तेमाल हुआ। हम आराम से टहलने के लिए कपड़े नहीं पहन रहे बल्कि विश्वास की ऐसी कुश्ती लड़ने के लिए तैयार हो रहे हैं (1 तीमुथियुस 6:12क)।

उठकर कपड़े पहनने के बाद हमें क्या करना है? हमें ऐसा जीवन जीना है, जिससे हमारे सृष्टिकत्ता और उद्धारकर्ता को महिमा मिले। जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें (रोमियों 13:13क)। जैसा दिन यह संकेत देता है कि हमारे जीवन लोगों के सामने खुले होने चाहिए जिसे कोई भी देखे हमें शर्मिंदा न होना पड़ें।

शोभा देना के बारे में पौलुस के उन इनकार के कारणों अर्थात लीला क्रीड़ा और पियक्कड़पन, व्यभिचार और लुचपन और झगड़े और डाह की घोषणा करेंगे (आयत 13ख)। यह अंधकार के कामों की पूरी सूची नहीं है, बल्कि यह आधी सूची है। ऐसी सूचियों में पौलुस की तरह जैसे उसने गलातियों 5:19-21 में जोड़ा हम भी और ऐसे-ऐसे जोड़ सकते हैं। हमारे वचन पाठ के छह उदाहरणों को तीन सुरों में बांटा गया है।

पहला जोड़, लीला क्रीड़ा और पियक्कड़पन है। लीला क्रीड़ा से लिया गया है जो आयत 13 में अत्यधिक दावत लीला क्रीड़ा मौजमस्ती का संकेत है। मौजमस्ती की वह किस्म बताता है जो व्यक्ति को नीचे करती है और दूसरों के लिए मूर्खता है। पियक्कड़पन का परिणाम आमतौर पर यही होता था सो यह पियक्कड़पन नशा के पाप से जुड़ गया। उसके बाद व्यभिचार और लुचपन है। व्यभिचार शारीरिक पाप के लिए नहीं बल्कि बिस्तर के लिए बहुवचन रूप से किया गया है। शारीरिक भोग के लिए कोमल शब्द के रूप में किया जाता था। बिस्तर का इस्तेमाल कई बार वैसे ही किया जाता था जैसे आज वे हम बिस्तर हो गए कहा जाता है। बिस्तरों का अर्थ यहां

अवैध शारीरिक संबंध है।

व्यभिचार, लुचपन के साथ जुड़ा है। अति, व्यभिचार संयम की कमी, अश्लीलता, विलासिता, प्रमुख विचार निर्लज्ज व्यवहार है। विलियम बार्कले ने लिखा यूनानी भाषा के सबसे गंदे शब्दों में से एक है। यह केवल अनैतिकता का वर्णन ही नहीं करता, बल्कि यह उस व्यक्ति का भी वर्णन करता है जो पाप में खो बैठा है। जॉन मैकार्थर ने कहा है, यह आज के समाज की विशेष बात कामुक विलासिता और भ्रष्टता के ढंग को बताता है जिसे आमतौर पर अन्तर के निशान के रूप में शान से दिखाया जाता है।

यदि पाप के पहले दो जोड़ों ने आपको दोषी नहीं ठहराया तो तीसरा ठहराता है, झगड़ा और डाह। झगड़ा से लिया गया है जिसका अर्थ विवाद है, जो शत्रुता की अभिव्यक्ति विवाद का संकेत है। विरोध से भरी मुकाबले की भावना को दर्शाता है, जो किसी का भी या दूसरों का कितना भी नुकसान क्यों न हो जाए, अपनी मनवाने के लिए लड़ता हैं यह ईर्ष्या से जुड़ा है जो उस मन को दिखाता है, जो उससे जो उसके पास हैं संतुष्ट नहीं हो सकता किसी दूसरे को मिलने वाली हर आशीष जो उसे नहीं मिलती पर ईर्ष्या भरी नजर रखता है।

कई लोग पहले चार पापों अर्थात लीला क्रीड़ा पियक्कड़पन व्यभिचार और लुचपन को बुरे पाप मानते हैं, पर झगड़े और डाह को इतने बुरे नहीं की श्रेणी में रखते हैं। यह तथ्य कि पौलुस ने अंतिम दो का नाम दूसरे के साथ दिया है इस बात का संकेत है कि परमेश्वर पापों को बड़ा या छोटा के रूप में नहीं बांटता। पहले चार पापों में विस्तृत किए गए पापपूर्ण और स्वार्थी अतिभोग की और सभ्य अभिव्यक्तियां ही हैं। हो सकता है कि पौलुस ने उन्हें अंत में इसलिए दिया हो कि उन्हें हमारे लिए इस सूची में दिए गए दूसरों पापों के बजाय इनसे छुटकारा पाना कठिन होता।

हम इन अंधकार के कामों से कैसे बच सकते हैं? पौलुस ने दो बातें कहीं हैं, जिनमें से एक सकारात्मक है और एक नकारात्मक है। पहले सकारात्मक को देखते हैं, आयत 12 में इस प्रेरित ने अपने पाठकों से ज्योति के हथियार बांध लेने को कहा था आयत 14क में उसने उन्हें यीशु मसीह को पहन लेने का आग्रह किया। मसीह यीशु को वह हथियार बनने दो जो तुम्हें पहनना है।

मसीह को पहन लेने का क्या अर्थ है? अध्याय 6 में हमें बताया गया था कि बपतिस्मा लेने पर हम मसीह यीशु में बपतिस्मा और उसके साथ एक हो जाते है (आयतें 3:5)। पहले एक पत्र में पौलुस ने लिखा, और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:27)। मसीह में बपतिस्मा लेकर मसीही बनने के समय हमने मसीह को पहन लिया, पर हमें ऐसे लोगों के रूप में रहना भी सीखना आवश्यक है कि जिन्होंने मसीह को पहना है। हमें दयालुता और प्रभु की सामर्थ को पहनना आवश्यक है। यदि हम ऐसा करते हैं तो हम आयत 13 में दिए गए पापों की किस्मों से बचेंगे।

पौलुस की नकारात्मक आज्ञा आगे हैं। यह एक व्यावहारिक आज्ञा है, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो (रोमियों 13:14ख)। उपाय से लिया गया जिसका अर्थ पूर्वविचार के साथ विचार करना है।

शरीर के लिए उपाय करने का क्या अर्थ होगा? किसी बात के लिए किसी भी बात के लिए तैयारी करने पर विचार करें। यह आने वाला समय हो सकता है या निकट आ रही सर्दियां या भविष्य की कोई बात। इनमें से प्रत्येक के लिए आप उपाय कैसे करते हैं? मैं सीधा सा उदाहरण देता हूं। आप लकड़ियों के बीच में से जा रहे हैं और आग जलाने का निर्णय लेते हैं। आप उसके लिए उपाय कैसे करते हैं? पहले तो आप को लकड़ियों से ढेर की और फिर आग

जलाने के लिए और सामग्री की आवश्यकता होगी, सो आप सब चीजें इक्ट्ठी करें। फिर आप को आग जलाने के लिए लकड़ियों की आवश्यकता पड़ेगी, हो सकता है कि आपकी जेब में माचिस की डिबिया हो। लकड़ी और आग के साथ आपने आग जलाने के लिए उपाय किया। यदि आप लकड़ियों और लपटों को निकाल दें तो आग नहीं लग सकती। पौलुस के कहने का अर्थ था कि अपनी वासनाओं को जलने से बचाने के लिए माचिस फेंक कर लकड़ियां इक्ट्ठी करना बंद कर दें।

यदि मसीह में परिवर्तित कोई शराबी अपने घर में शराब रखे और अपने पुराने शराबी साथियों के साथ संगति न छोड़ें तो वह नशा करने का उपाय नहीं कर रहा है। यदि आप शनिवार देर रात तक जागते रहें और अगली सुबह आराधना के दिन देर तक सोते रहें तो आप आराधना में न जाने का उपाय कर रहे हैं।

अपने आप से पूछें, मेरी आत्मिक कमियां क्या हैं? (आपको उनका पता होना चाहिए क्योंकि शैतान को आपकी कमजोरियों का पता है)। फिर पूछें, मुझे परीक्षा में पड़ने के लिए कौन से लोग, कौन सी जगह, कौन से काम और कौन सी परिस्थितियां सबसे अधिक प्रोत्साहित करती है? उस प्रश्न का उत्तर देने के बाद आप ऐसे लोगों, कार्यों और परिस्थितियों से बचने का हर प्रयास करें। इसके उलट करना शरीर के लिए इसकी लालसाओं के अनुसार उपाय करना हैं ए. जे. फोरमैन ने आयत 14 के अंत को अपने शब्दों में इस प्रकार लिखा है, पाप के लिए योजना न बनाएं इसका स्वागत न करें, इसे कुछ अवसर न दे। पाप को अपने घर की दहलीज से धक्का दे दें तो यह आपके घर में घुस नहीं पाएगा।

कलीसिया के इतिहास में अगस्टिन का नाम प्रस्तुत लोगों में आता है। कनफैशन्स लिखते हुए उसने अपने मनपरिवर्तन के बारे में बताया। 386 ई. के गर्मियों के मौसम में मिलान इटली में वाकपटुता के सम्मानित प्रोफेसर के रूप में वह लगभग मसीही बनने ही वाला था। परन्तु वह पाप के अपने पुराने जीवन से नाता तोड़ने में सफल नहीं रहा। एक दिन वह किसी मित्र के बाग में था जब उसे किसी बच्चे के यह कहने की आवाज सुनाई दी, उठाकर पढ़े। पास के बेंच पर पौलुस की पत्रियों की प्रति थी। अगस्टिन ने उसे उठा लिया और जो सबसे पहले शब्द उसे दिखाई दिए वे ये थे, न कि लीला क्रीड़ा और पियक्कड़पन न व्यभिचार, और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में। वरन प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो। (आयत 13, 14)। उसने लिखा, इसके आगे मैंने नहीं पढ़ा न मुझे आवश्यकता थी, क्योंकि उस वाक्य के खत्म होने के तुरन्त बाद एक प्रकाश के रूप में मेरे हृदय में रक्षा घुस गई और संदेह की हर बात निकल गई।

पौलुस के शब्दों से अगस्टिन को बदलने में सहायता मिली और वे शब्द आपको बदलने के लिए भी सहायक हो सकते हैं। अब से लेकर जब तक प्रभु दोबारा नहीं आता, यह आवश्यक है कि आपका जीवन भक्तिपूर्ण हो।

सारांश : रोमियों 13:8-14 को सुस्त मसीही लोगों को जगाने के लिए परमेश्वर की पुकार का नाम दिया गया है। इस वचन पाठ को प्रक्षेप में करने का एक सीधा तरीका यह है कि जबकि प्रभु किसी भी समय आ सकता है कि हम सब को अपने आपसे पूछना आवश्यक है कि क्या मैं उसके आने के लिए तैयार हूं? यदि आपके आत्मिक जीवन में कोई कमी है तो मेरी प्रार्थना है कि वह कमी आपके जीवन में से निकल जाए।